अंक 18 माहः जनवरी 2026

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

" स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—
ये केवल अलग-अलग आदर्श नहीं,
बल्कि एक ही जीवन-मूल्य के तीन रूप हैं। "

संविधान की आत्मा इन्हीं सिद्धांतों में निहित है।

- बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर

संपादकीय

स्वर्णिम भारत : अतीत से भविष्य की ओर

इस वर्ष का गणतंत्र दिवस भारत के उस दृढ़ संकल्प का प्रतीक है, जिसमें राष्ट्र अपनी समृद्ध विरासत को आधार बनाकर विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। "स्वर्णिम भारत : विरासत और विकास" केवल एक विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का घोष है—एक ऐसी सोच, जो अतीत के गौरव, वर्तमान की सक्रियता और भविष्य की दूरदर्शिता को एक सूत्र में पिरोती है।

जब हम राष्ट्रगान "जन गण मन" का सामूहिक गान करते हैं, तब हम केवल एक परंपरा का निर्वाह नहीं करते, बल्कि उस एकता, अखंडता और समरसता का सम्मान करते हैं, जो भारत की आत्मा है। राष्ट्रगान में उल्लिखित विविध प्रदेश, संस्कृतियाँ और भौगोलिक विस्तार यह संदेश देते हैं कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में निहित है। यही विविधता स्वर्णिम भारत की आधारशिला है। यह हमें स्मरण कराती है कि राष्ट्र का उत्थान सामूहिक सहभागिता से ही संभव है।

भारत की पहचान उसकी बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं, भाषाई विविधता और सामाजिक समरसता में निहित है। हमारी विरासत हमें सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता का पाठ पढ़ाती है, जबकि हमारा संविधान हमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्श प्रदान करता है। यही मूल्य राष्ट्र निर्माण की दिशा निर्धारित करते हैं। गणतंत्र दिवस इन आदर्शों को आत्मसात करने और उन्हें व्यवहार में उतारने का अवसर प्रदान करता है।

विकास की अवधारणा केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है। यह शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, नवाचार, सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों के संतुलित विस्तार से जुड़ी है। आज भारत आत्मनिर्भरता, डिजिटल प्रगति और वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर है, परंतु इस यात्रा में अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखना उतना ही आवश्यक है। परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन ही हमें स्थायी और समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ाता है।

"स्वर्णिम भारत" की परिकल्पना तभी साकार होगी, जब प्रत्येक नागरिक स्वयं को राष्ट्र के भाग्य निर्माण में सहभागी माने। राष्ट्रगान की भावना हमें यह सिखाती है कि भारत का "भाग्य विधाता" कोई एक व्यक्ति नहीं, बल्कि जागरूक, जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों का सामूहिक स्वरूप है। अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में सजग रहना और भविष्य के लिए दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाना—यही गणतंत्र की सच्ची भावना है।

इस गणतंत्र दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी विरासत का सम्मान करते हुए विकास की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाएँगे, संविधान के आदर्शों को जीवन में उतारेंगे और एक समरस, प्रगतिशील एवं सशक्त भारत के निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करेंगे। यही स्वर्णिम भारत की ओर हमारा सच्चा कदम होगा।

जय हिंद। जय भारत।

संकल्प : स्वर्णिम भारत के निर्माण का दायित्व

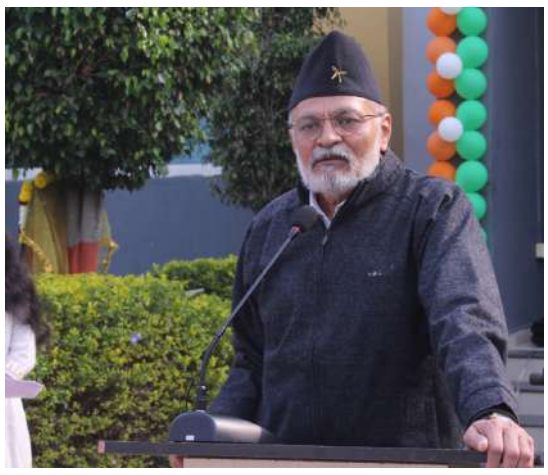

गणतंत्र दिवस हमें केवल संविधान के अंगीकरण का स्मरण नहीं कराता, बल्कि यह अवसर हमें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों और संकल्पों की पुनः याद दिलाता है। यह दिवस इस बात का प्रतीक है कि भारत की शक्ति उसकी लोकतांत्रिक परंपराओं, संवैधानिक मूल्यों और जागरूक नागरिकों में निहित है।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस ने विशेष रूप से यह संदेश दिया है कि शक्ति को सर्वोपरि मानते हुए राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को और अधिक समावेशी बनाया जाए। सेना के पाथ संचलन का नेतृत्व महिला सैन्य अधिकारियों द्वारा किया जाना नारी-शक्ति के बढ़ते आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रसेवा में उसकी निर्णायक भूमिका का सशक्त उदाहरण है। यह दृश्य उस बदलते भारत को दर्शाता है, जहाँ नारी को केवल सहभागिता नहीं, बल्कि नेतृत्व का दायित्व भी सौंपा जा रहा है।

"स्वर्णिम भारत" की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है, जब हम अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करते हुए विकास की दिशा में सक्रिय सहभागिता निभाएँ। लैंगिक समानता इस विकास की अनिवार्य शर्त है। जब समाज के सभी वर्ग—स्त्री और पुरुष—को समान अवसर, गरिमा और अधिकार प्राप्त होते हैं, तभी राष्ट्र की प्रगति संतुलित और स्थायी होती है।

उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने के केंद्र नहीं, बल्कि ऐसे संस्कार-स्थल हैं, जहाँ संवैधानिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टि, नैतिक मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होता है। आज का युवा वर्ग ज्ञान, तकनीक और नवाचार से सुसज्जित है; आवश्यकता है कि वह इस सामर्थ्य का उपयोग राष्ट्र निर्माण, सामाजिक न्याय और समरसता के लिए करे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि प्रत्येक नागरिक—विशेषकर युवा वर्ग—अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हो जाए और शिक्षा को परिवर्तन का माध्यम बनाए, तो भारत निश्चय ही एक सशक्त, समृद्ध और स्वर्णिम राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित होगा।

इस गणतंत्र दिवस पर आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम शक्ति को संसाधन के रूप में पहचानेंगे, असमानता को अस्वीकार करेंगे, शिक्षा और समानता को विकास का आधार बनाएँगे और मिलकर स्वर्णिम भारत के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँगे।
जय हिंद। जय भारत।

कुलगुरु ,
डॉ. अरुण रमेश जोशी

विकास की दिश : आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना

विकास की अवधारणा को केवल भौतिक प्रगति तक सीमित नहीं किया जा सकता। वास्तविक विकास वही है, जिसमें सामाजिक समरसता, बौद्धिक उन्नयन तथा मानवीय मूल्यों का संतुलित समावेश हो। "आत्मनिर्भर भारत" की संकल्पना इसी व्यापक दृष्टिकोण पर आधारित है, जहाँ राष्ट्र अपनी आंतरिक क्षमताओं को सुदृढ़ बनाते हुए सतत प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता है।

आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, नवाचार और कौशल विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है। एक सशक्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली ही ऐसे मानव संसाधन का निर्माण कर सकती है, जो वैश्विक चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास के साथ कर सके। इस संदर्भ में विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये संस्थान युवाओं को ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल और उद्यमशीलता की भावना से भी समृद्ध करते हैं।

जब देश की युवा शक्ति नवाचार, अनुसंधान और आत्मनिर्भरता की दिशा में सक्रिय होती है, तभी विकास की गति को नई ऊर्जा प्राप्त होती है। स्टार्टअप संस्कृति, तकनीकी अनुसंधान और कौशल-आधारित शिक्षा भारत को आत्मनिर्भर बनाने के प्रभावी माध्यम हैं। साथ ही यह आवश्यक है कि विकास की यह यात्रा समावेशी हो, जिससे समाज का प्रत्येक वर्ग इसका लाभ प्राप्त कर सके।

"स्वर्णिम भारत" का सपना तभी साकार होगा, जब प्रशासन, शिक्षा जगत और युवा शक्ति मिलकर राष्ट्र निर्माण में अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन करें। गणतंत्र दिवस का यह पावन अवसर हम सभी को यह संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि हम अपने कार्यक्षेत्र में निष्ठा, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के साथ योगदान दें तथा आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय सहभागी बनें।

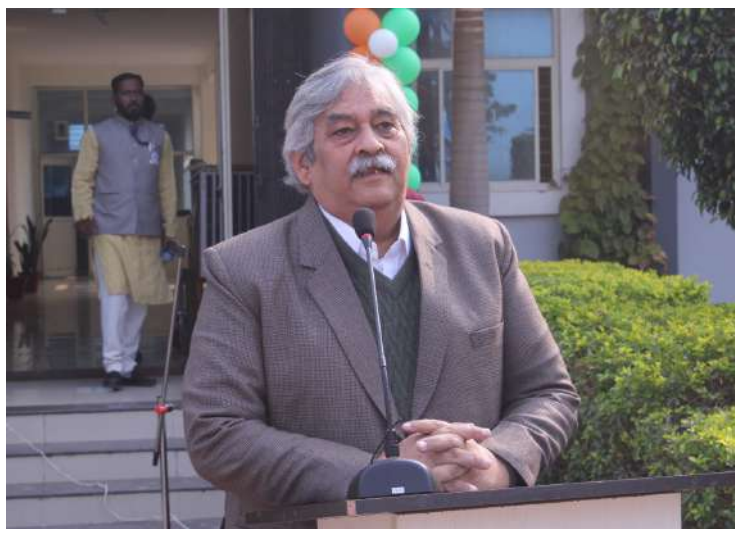

कुलसचिव,
श्री रवि चतुर्वेदी

संविधान और विरासत: लोकतंत्र की मजबूत नींव

"भारतीय संविधान हमारी लोकतांत्रिक विरासत का सबसे सशक्त और मूल्यपरक आधार है।"यह केवल शासन व्यवस्था को संचालित करने का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक चेतना का आधार है। संविधान में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उसके निर्माण के समय थे, और यही मूल्य भारत को एक सुदृढ़ लोकतंत्र के रूप में स्थापित करते हैं।

"स्वर्णिम भारत" की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है, जब हम संविधान की भावना को केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं, बल्कि व्यवहारिक रूप से अपनाएँ। संविधान का सम्मान केवल अधिकारों की चर्चा तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक में कर्तव्यबोध, अनुशासन और नैतिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का आधार भी है। लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति नागरिकों की सजग सहभागिता में निहित होती है।

युवा भारत और स्वर्णिम भविष्य

भारत का युवा आज ज्ञान, तकनीक और नवाचार का वाहक है। हम छात्र उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझते हुए विकास की दिशा तय कर सकती है। गणतंत्र दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि राष्ट्र का भविष्य केवल योजनाओं से नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक चेतना से निर्मित होता है।

गणतंत्र : अधिकारों के साथ कर्तव्यों का बोध

- **बी.एस.सी. साइंस छठे सेमेस्टर के छात्र तेजस झा ने अपने भाषण "गणतंत्र का अर्थ केवल अधिकार नहीं, कर्तव्य भी है" के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि संविधान हमें स्वतंत्रता देता है, परंतु उसके साथ राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व भी सौंपता है। एक जागरूक नागरिक वही है, जो अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी निष्ठा से पालन करे।**

कविता में राष्ट्र की आत्मा

- **बी.पी.टी. प्रथम वर्ष के छात्र जुनैद खान की कविता ने गणतंत्र दिवस के भाव को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी—**

एक शैक्षणिक संस्था के रूप में विश्वविद्यालयों की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक उपलब्धियाँ प्राप्त करना नहीं, बल्कि संविधान-सम्मत, विचारशील और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण करना है। विश्वविद्यालयों को छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक सोच और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करने का केंद्र बनना चाहिए, ताकि वे लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ करने में सकारात्मक योगदान दे सकें।

आज जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहा है, तब यह आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और समावेशिता के साथ संतुलित रहे। परंपरा और आधुनिकता, अधिकार और कर्तव्य, स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व—इन सभी का समन्वय ही एक मजबूत लोकतंत्र की पहचान है।

गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम भारतीय संविधान की गरिमा बनाए रखते हुए लोकतंत्र की नींव को और अधिक मजबूत करेंगे तथा विरासत और विकास के संतुलन से युक्त स्वर्णिम भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँगे।

अकादमिक अधिष्ठाता,
डॉ. योगेश महाजन

"बता क्या पूछता है मुल्क में किसका गुजारा है,
ये हिंदुस्तान हमारा है।
मेरी नजरों में देखो मुल्क का दिलकश नज़ारा है,
यह हिंदुस्तान हमारा है।"

उनकी पंक्तियाँ भारत की सांप्रदायिक सौहार्द, राष्ट्रीय एकता और सीमाओं की रक्षा में तत्पर युवाओं की भावना को सशक्त रूप में प्रस्तुत करती हैं—

"हमारे मुल्क में हिंदू-मुसलमान साथ रहते हैं,
यहाँ ईसाई के कंधे पे सिख के हाथ रहते हैं।"

यह कविता भारत की आत्मा—विविधता में एकता—का सजीव चित्रण है।

शिक्षा, संविधान और युवाओं की भूमिका

- **परीक्षा विभाग की फैकल्टी आयुषी उपाध्याय द्वारा दिए गए वक्तव्य ने छात्र चेतना को वैचारिक गहराई प्रदान की। उन्होंने भारत के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर संविधान को केवल कानूनी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि जीवंत सामाजिक अनुबंध बताया, जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर आधारित है। उन्होंने यह महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाया कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली केवल डिग्रियाँ दे रही है या संविधान-सम्मत नागरिकों का निर्माण भी कर रही है। उनके अनुसार विश्वविद्यालयों को ज्ञान के साथ-साथ नैतिक विवेक, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व का केंद्र बनना चाहिए।**

युवा : भविष्य नहीं, वर्तमान के निर्माता

आज का भारत डिजिटल नवाचार, स्टार्टअप संस्कृति और आत्मनिर्भरता की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में युवाओं की भूमिका केवल दर्शक की नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागी की है। जैसा कि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कहा था—

"जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।"

छात्रों की सोच, अभिव्यक्ति और सहभागिता ही स्वर्णिम भारत की आधारशिला है। गणतंत्र दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम संविधान के मूल्यों को केवल पढ़ेंगे नहीं, बल्कि अपने आचरण में उतारेंगे और भारत को नैतिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक रूप से सशक्त राष्ट्र बनाएँगे

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. (डॉ.)अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सी. वी. आर. यू. खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी,
कुलसचिव, सी. वी. आर. यू. , खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, अधिष्ठाता अकादमिक
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

वृतांत

13 जनवरी 2026 | अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में नेपाल से आए अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने शैक्षणिक सहयोग, छात्र विनिमय, द्वैध डिग्री एवं विशेषज्ञता आधारित पाठ्यक्रमों को लेकर संवाद किया। प्रतिनिधिमंडल ने विश्वविद्यालय की अधोसंरचना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं अनुशासित वातावरण की सराहना की। कुलगुरु डॉ. अरुण रमेश जोशी ने वैश्विक शैक्षणिक सहभागिता को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की, वहीं कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने नेपाल के विद्यार्थियों के लिए समावेशी शैक्षणिक अवसरों पर प्रकाश डाला।

15 जनवरी 2026 | शैक्षणिक समझौता (MoU)

विश्वविद्यालय एवं भारतीय लागत लेखा संस्थान (ICMAI) के मध्य कृषि लागत प्रबंधन एवं लेखांकन विषय पर समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता विद्यार्थियों को उद्योगोन्मुख, कौशल आधारित एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

16 जनवरी 2026 | राष्ट्रीय सम्मेलन

विश्वविद्यालय में ICSSR प्रायोजित राष्ट्रीय सम्मेलन "AI और खाद्य सुरक्षा" का आयोजन किया गया। सम्मेलन में इसरो सहित देश–विदेश के विशेषज्ञों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कृषि नवाचार एवं खाद्य सुरक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

17 जनवरी 2026 | अंतरराष्ट्रीय शोधशिखर एवं कार्यशाला

इस दिन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय "शोधशिखर विज्ञान पर्व" का आयोजन किया गया, जिसमें अनुसंधान, नवाचार एवं सतत विकास लक्ष्यों पर विमर्श हुआ। इसी क्रम में "AI और खाद्य सुरक्षा : शेपिंग द फ्यूचर ऑफ विकसित भारत" विषय पर तकनीकी कार्यशाला आयोजित की गई। पूर्व इसरो वैज्ञानिक डॉ. मधुकांत पटेल एवं AI विशेषज्ञ डॉ. वेदांत अहलूवालिया ने मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में रमन अनुसन्धानिकी वेबसाइट, पेटेंट एवं रिसर्च कॉम्पेंडियम का विमोचन भी किया गया।

20 जनवरी 2026 | खेल उपलब्धियाँ

राज्य स्तरीय एवं अखिल भारतीय विश्वविद्यालय कुश्ती प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में माधुरी पटेल ने 50 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर मध्यप्रदेश केसरी का खिताब प्राप्त किया, जबकि पवन पटेल ने 57 किग्रा वर्ग में रजत पदक प्राप्त किया। अखिल भारतीय प्रतियोगिता में नीरज पटेल, पवन पटेल एवं निखिल राजपूत ने क्वार्टर फाइनल तक पहुँचकर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

26 जनवरी 2026 | गणतंत्र दिवस समारोह

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में 77वाँ गणतंत्र दिवस गरिमामय वातावरण में मनाया गया। ध्वजारोहण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं संविधान आधारित प्रस्तुतियों के माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता और युवाशक्ति की भूमिका को रेखांकित किया गया।

30 जनवरी 2026 | पर्यटन एवं सतत विकास सहयोग

विश्वविद्यालय एवं NFTCI (नई दिल्ली) के मध्य पर्यटन विकास, हरित ऊर्जा, सर्कुलर इकोनॉमी एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सहयोग हेतु MoU पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं रोजगारोन्मुख अवसर प्रदान करेगा।